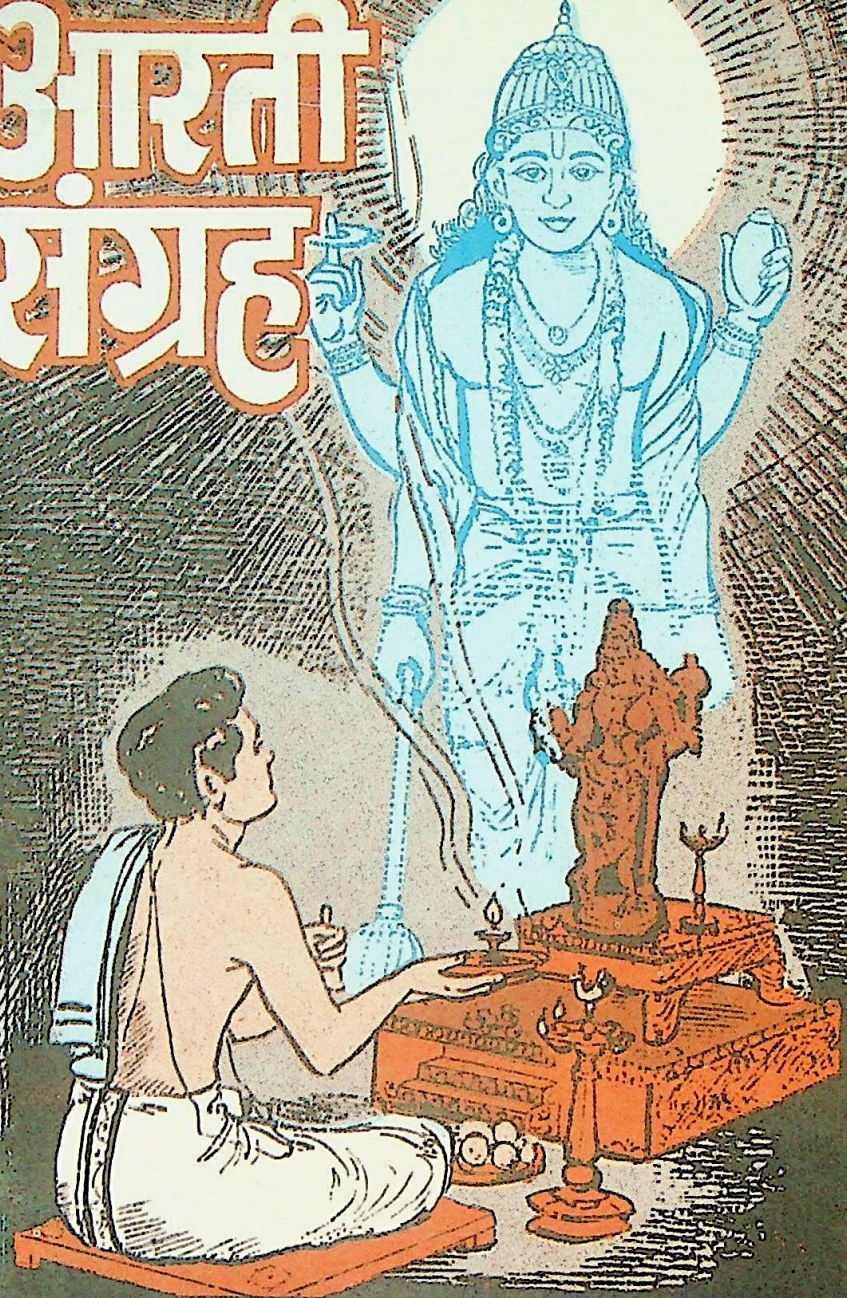


# आरती संग्रह



खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन बम्बई





# आरती संग्रह

खेमराज श्रीकृष्णदास बम्बई प्रकाशन

संस्करण : फरवरी २०१२, सम्वत् २०६८.

मूल्य : २० रुपये मात्र ।

मुद्रक एवं प्रकाशक:

**खेमराज श्रीकृष्णदास,<sup>TM</sup>**

अध्यक्ष : श्रीवेङ्कटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,

मुंबई - ४०० ००४.

© सर्वाधिकार : प्रकाशक द्वारा सुरक्षित

Printers & Publishers :

Khemraj Shrikrishnadass,

Prop: Shri Venkateshwar Press,

Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi,

Mumbai - 400 004.

Web Site : <http://www.Khe-shri.com>

Email : [khemraj@vsnl.com](mailto:khemraj@vsnl.com)

Printed by Sanjay Bajaj For M/s. Khemraj Shrikrishnadass  
Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai - 400 004,  
at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial  
Estate, Pune 411 013.



श्री:

## अथ आरतीसंग्रहकी अनुक्रमणिका

नाम-आरती	पृष्ठांक	नाम-आरती	पृष्ठांक.
आरती ज्ञाता संतोषी जी की ...	४	आरती दुर्गाजीकी दूसरी ...	१९
आरती श्रीगणपतिजीकी ...	५	आरती वजरंगवालाकी ...	१९
आरती लक्ष्मीरमणकी ...	६	आरती जगन्नाथजीकी ...	२०
आरती श्रीकृष्णचन्द्रजीकी ...	७	आरती शिवजीकी ...	२१
आरती त्रिगुण शिवजीकी ...	८	आरती वजरंगवालाजीकी ...	२३
आरती दुर्गाजीकी ...	"	आरती रामचंद्रजीकी ...	२३
आरती श्रीलक्ष्मीजीकी ...	९	आरती दूसरी श्रीरामचंद्रजीकी ...	२४
आरती सत्यनारायणजीकी ...	१०	आरती श्रीवेंकटेशजीकी ...	२४
आरती पार्वतीदेवीकी ...	११	आरती रघुनाथजीकी ...	२६
आरती जानकीनाथकी ...	१२	आरती संकट मोचन ...	२७
आरती लक्ष्मणवालाजीकी ...	१३	आरती जय जगदीश हरे ...	२८
आरती राधावरकी ...	"	आरती श्रीविश्वनाथजीकी ...	२९
आरती श्रीरामचंद्रजीकी ...	१४	प्रार्थना : पितु-मातु सहायक ...	३०
आरती शिवजीकी ...	१४	प्रार्थना : तेरे पूजन से ...	३१
आरती शिवजीकी दूसरी ...	१६	पुष्पाञ्जलि ...	३२
आरती शिवजीकी तीसरी ...	१७	स्तुति ...	३२
आरती दुर्गाजीकी ...	१७		

॥ इति आरतीसंग्रहकी अनुक्रमणिका समाप्ता ॥

## आरती माता संतोषी जी की !

जय सन्तोषी माता, मैया जय सन्तोषी माता ।  
अपने सेवक जन की, सुख सम्पति दाता ॥ जय...  
सुंदर चीर सुनहरी, मां धारण कीन्हों ।  
हीरा पन्ना दमके, तन शृंगार लियो ॥ जय...  
गेरू लाल छटा छबि, बदन कमल सोहे ।  
मंद हंसत करुणामयि, त्रिभुवन मन मोहे ॥ जय...  
स्वर्ण सिंहासन बैठी, चंवर दुरे प्यारे ।  
धूप दीप मधु मेवा, भोग धरे न्यारे ॥ जय...  
गुड़ अरु चना परमप्रिय, तामें संतोष कियो ।  
संतोषी कहलाई, भक्तन विभव दियो ॥ जय...  
शुक्रवार प्रिय मानत, आज दिवस सोही ।  
भक्तमण्डली छाई, कथा सुनत मोही ॥ जय...  
मंदिर जगमग ज्योति, मंगल ध्वनि छाई ।  
विनय करें हम बालक, चरनन शिर नाई ॥ जय...  
भक्ति भावमय पूजा, अंगीकृत कीजै ।  
जो मन वसै हमारे, इच्छा फल दीजै ॥ जय...  
दुखी, दरिद्री, रोगी, संकट मुक्त किए ।  
बहु धन-धान्य भरे घर, सुख सौभाग्य दिए ॥ जय...  
ध्यान धर्यो जिस नर ने, वांछित फल पायो ।  
पूजा कथा श्रवण कर, घर आनंद आयो ॥ जय...  
शरण गहे की लज्जा, राखियो जगदम्बे ।  
संकट तू ही निवारे, दयामयी अम्बे ॥ जय...  
संतोषी मां की आरति, जो कोई नर गावे ।  
ऋद्धि-सिद्धि सुख-संपत्ति, जी भर के पावे ॥ जय...  
बोलो संतोषी माता की जय !





## अथ श्रीगणपतिजीकी आरती

श्रीगणेशाय नमः ॥ गणपतिकीसेवामंगलमेवासेवासे  
 सबविघ्नटरे । तीनलोकतेतीसदेवताद्वारखड़ेसबअर्जकरै ॥  
 ॥ टेरे ॥ ऋधिसिधिदक्षिणवामविराजैअरुआनंदसोंचमर  
 करै । धूपदीपऔलियाआरतीभक्तखड्याजयकारकरै ॥  
 गणप० ॥ १ ॥ गुड़केमोदकभोगलगतहैमूषकवाहनचढ़ासरै ।  
 सौम्यरूपसेयेगणपतिकोविघ्नभाजज्यादूरपरै ॥ गणप० ॥  
 ॥ २ ॥ भादौमासऔरशुक्लचतुर्थीदिनदोपारापूरपरै । लियो  
 जन्मगणपतिप्रभुजीसुनिदुर्गामनआनंदभरै ॥ ग० ॥ ३ ॥  
 अद्भुतबाजाबज्याइंद्रकादेववधूजहंगानकरै । श्रीशंकरके  
 आनंदउपज्योनामसुन्यासबविघ्नटरे ॥ ग० ॥ ४ ॥ आनि  
 विधाताबैठेआसनइंद्रअप्सरानिरतकरै । देखवेदब्रह्माजी  
 जाकोविघ्नविनाशकनामधरै ॥ ग० ॥ ५ ॥ एकदंतगजवदन  
 विनायकत्रिनयनरूपअनूपधरै । पगथंभासाउदरपुष्टहैदेख



चंद्रमाहास्यकरैं ॥ गणप० ॥ ६ ॥ दैशरापश्रीचंद्रदेवको  
 कलाहीनततकालकरैं । चौदालोकमेंफिरेंगणपतीतीनभुवन  
 मेंराज्यकरैं ॥ गण० ॥ ७ ॥ उठप्रभातजबकरेध्यानकोइताके  
 कारजसर्वसरैं । पूजाकालेगावआरतीकेसिरयशछत्रफिरैं ॥  
 गण० ॥ ८ ॥ गणपतिकीपूजापेलाकरणीकामसबीनिर्विघ्न  
 सरैं । श्रीपरतापगणपतीजीकीहाथजोड़करस्तुतिकरैं ॥  
 गणपतिकीसेवामंगलमेवा० ॥ ९ ॥

इति श्रीगणपतिजीकी आरती समाप्त ।

## अथ लक्ष्मीरमणकी आरती

जयलक्ष्मीरमणा श्रीजयलक्ष्मीरमणा शरणागतजन  
 शरणेगोवर्द्धनधरणा ॥ टेरे ॥ जयजययमुनातटनिकटित  
 प्रगटितपटुवेसा । अटपटगोपीकुचजबपटहरनटभेसा ॥  
 जय० ॥ १ ॥ जयमुरलीरवतरलीकृतगोपीलीले । तुवभक्तीमें  
 भवतुब्रजललनामीले ॥ जय० ॥ २ ॥ जयजयभगवन्भगवन्  
 कंसारे । पतितंपतितंकृपयातारेसंसारे ॥ जय० ॥ ३ ॥ जय  
 जयगोपीप्रतिपालकबंधो । कीमात्रातुमशक्तकृष्णकृपासि-  
 धो ॥ जय० ॥ ४ ॥ जयजयभक्तजननप्रतिपालकचिरंजीवो  
 जिष्णो । मामुद्धरदीनोद्धरधरणीधरविष्णो ॥ जय० ॥ ५ ॥



जयजयकृष्णस्वामीनिजपदरसगामें । कुरुकरुणांकुरु  
करुणांदाससखारामें ॥ जयलक्ष्मीरमणा० ॥ ६ ॥

इति लक्ष्मीरमणाकी आरती समाप्त ।

## अथ श्रीकृष्णजीकी आरती

आरतियुगलकिशोरकीकीजे । राधेतनमनधनन्योछावर  
कीजे ॥ रविशशिकोटिवदनकीशोभा । ताहिनिरखिमेरो  
मनलोभा ॥ आरति० ॥ १ ॥ गौरश्याममुखनिरखतरीजे ।  
प्रभुकोस्वरूपनयनभरिपीजे ॥ आरति० ॥ २ ॥ कंचनथाल  
कपूरकीबाती । हरिआयेनिर्मलभईछाती ॥ आरति० ॥ ३ ॥  
फूलनकीसेजफूलनगलमाला । रत्नसिंहासनबैठेनंदलाला ॥  
आरति० ॥ ४ ॥ मोरमुकुटकरमुरलीसोहै । नटवरवेषदेख  
मनमोहै ॥ आरति० ॥ ५ ॥ ओढ्यानीलपीतपटसारी ।  
कुंजबिहारीगिरिवरधारी ॥ आरती० ॥ ६ ॥ श्रीपुरुषोत्तम  
गिरिवरधारी । आरतिकरतसकलब्रजनारी ॥ आ० ॥ ७ ॥  
नंदनंदनवृषभानुकिशोरी । परमानंदस्वामीअविचल  
जोरी ॥ आरतियुगलकिशोरकीकीजे ॥ तन० ॥ ८ ॥

इति श्रीकृष्णजीकी आरती समाप्त ।



## अथ त्रिगुणआरती शिवजीकी

जयशिवओंकाराहरजैशिवओंकारा । ब्रह्माविष्णुसदा  
 शिवअर्द्धगीधारा ॥ टेर ॥ एकाननचतुराननपंचाननराजै ।  
 हंसासनगरुडासनवृहषवानसाजै ॥ जैशि० ॥ १ ॥ दोयभुज  
 चारचतुर्भुजदशभुजतेसोहै । तीनोंरूपनिरखतात्रिभुवन  
 जनमोहै ॥ जैशि० ॥ २ ॥ अक्षमालावनमालारुंडमालाधारी ।  
 चंदनमृगमदचंदाभालेशुभकारी ॥ जैशि० ॥ ३ ॥ श्वेतांबर  
 पीतांबरबाघंबरअंगे । सनकादिकप्रभुतादिकभूतादिकसंगे  
 जैशि० ॥ ४ ॥ करमध्येकमंडलुचक्रत्रिशूलधरता । जगकर्ता  
 जगभर्ताजगसंहारकर्ता ॥ जैशिव० ॥ ५ ॥ ब्रह्माविष्णु  
 सदाशिवजानतअविवेका । प्रणवअक्षरनुमध्येयेतीनोंएका  
 ॥ जैशिव० ॥ ६ ॥ त्रिगुणस्वामीजीकीआरतीजोकोईगावै ।  
 भणतशिवानन्दस्वामीमनवांछितपावै ॥ जैशिव० ॥ ७ ॥  
 इति त्रिगुणआरती शिवजीकी समाप्त ।

## अथ आरती श्रीदुर्गाजीकी

जैअंबेगौरीमैया जैमंगलमूर्ती मैया जैआनन्दकरणी ।  
 तुमकोनिशिदिनध्यावतहरब्रह्माशिवरी ॥ टेर ॥ मांगसिंदूर  
 विराजतटीकोमृगमदको । उज्ज्वलसेदोउनैनाचन्द्रवदन  
 नीको ॥ जैअंबे० ॥ १ ॥ कनकसमानकलेवररक्तांबरराजै ।



रक्तपुष्पगलमालाकंठनपरसाजै ॥ जैअंबे० ॥ २ ॥ केहरि  
 वाहनराजतखड्गखप्रधारी । सुरनरमुनिजनसेवततिनके  
 दुखहारी ॥ जैअंबे० ॥ ३ ॥ काननकुण्डलशोभितनासाग्रे  
 मोती । कोटिकचन्द्रदिवाकरसमराजतज्योती ॥ जैअंबे०  
 ॥ ४ ॥ शुम्भनिशुम्भविडारेमहिषासुरघाती । धूम्रविलोचन  
 नैनानिशिदिनमदमाती ॥ जैअंबे० ॥ ५ ॥ चौंसठयोगनी  
 गावतनृत्यकरतभैरुं । बाजततालमृदंगाऔरबाजतडमरू  
 ॥ जैअंबे० ॥ ६ ॥ भुजाचारअतिशोभितखड्गखप्रधारी ।  
 मनवांछितफलपावतसेवतनरनारी ॥ जैअंबे० ॥ ७ ॥ कंचन  
 थालविराजतअगरकपुरवाती । श्रीमालकेतुमेंराजतकोटि  
 रतनज्योती ॥ जैअंबे० ॥ ८ ॥ दोहा ॥ याअंबेकीआरती,  
 जोकोइनरगावै । भणतशिवानंदस्वामी, सुखसंपतिपावै ॥

इति श्रीदुर्गाजीकी आरती समाप्त ।

## अथ आरती श्रीलक्ष्मीजीकी प्रारंभ

जयलक्ष्मीमाता जयलक्ष्मीमाता । तुमकूं निशिदिन  
 सेवतहरविष्णुधाता ॥ टेर ॥ ब्रह्माणीरुद्राणीकमलातुहिहै  
 जगमाता । सूर्यचन्द्रमाध्यावतनारदऋषिगाता ॥ जय०  
 ॥ १ ॥ दुर्गारूपनिरंजनिमुखसंपतिदाता । जोकोइतुमकूं  
 ध्यावतऋधिसिधिधनपाता ॥ जयल० ॥ २ ॥ तूहीहैपाताल



बसंती तूहीहैशुभदाता । कर्मप्रभावप्रकाशक जगनिधिसे  
 ज्ञाता ॥ जयल० ॥ ३ ॥ जिसघरथारोबासोजाहिमेंगुण  
 आता । करनसकैसोइकरलेमननहिधड़काता ॥ जय० ॥ ४ ॥  
 तुमविनयज्ञनहोवेवस्त्रनहोयराता । खानपानकोविभवतुमैं  
 बिनकुणदाता ॥ जयल० ॥ ५ ॥ शुभगुणसुंदरयुक्ताक्षीरनिधी  
 जाता । रत्नचतुर्दशतोकूं कोइभीनहिपाता ॥ जयल० ॥ ६ ॥  
 याआरतीलक्ष्मीजीकीजोकोइनरगाता । उरअनंदअति  
 उमँगैपापउतरजाता ॥ जयल० ॥ ७ ॥ स्थिरचरजगतबचावै  
 कर्मप्रेरल्याता । रामप्रतापमैयाकीशुभदृष्टीचाता ॥ जय  
 लक्ष्मीमाताजयलक्ष्मीमाता । तुमकोनिशिदिनसेवतहर  
 विष्णूधाता ॥ ८ ॥

इति श्रीलक्ष्मीजीकी आरती समाप्त ।

## अथ सत्यनारायणजीकी आरती प्रारंभ

जयलक्ष्मीरमणा श्रीलक्ष्मीरमणा ॥ सत्यनारायण  
 स्वामी जनपातकहरणा ॥ जय० ॥ टेर ॥ रत्नजटित  
 सिंहासनअद्भुतछबिराजै । नारदकरतनिराजनघंटाध्वनि  
 बाजै ॥ जयल० ॥ १ ॥ प्रगटभयेकलिकारणद्विजकूंदरश  
 दिया । बुड्ढोब्राह्मणवनकैकचनमहलकिया ॥ जय० ॥ २ ॥  
 दुर्बलभीलकठारोजिनपरकृपाकरी । चंद्रचूड़यकराजा



जिनकीविपतिहरी ॥ जय० ॥ ३॥ वैश्यमनोरथपायोश्रद्धा  
तजदीनी । सोफलभोग्योप्रभुजीफेरस्तुतिकीनी ॥ जय०  
॥ ४॥ भावभक्तिकेकारणछिनछिनरूपधरचा । श्रद्धाधारण  
कीनीजिनकाकाजसरचा ॥ जय० ॥ ५॥ ग्वालबालसंग  
राजावनमेंभक्तिकरी । मनवांछितफलदीनोंदीनदयालुहरी ॥  
जय० ॥ ६॥ चढ़तप्रसादसवायो कदलीफलमेवा । धूपदीप  
तुलसीसेराजीसतदेवा ॥ जय० ॥ ७॥ श्रीसत्यनायणजीकी  
जोआरतीगावै । भणतमनसुखसंपतिमनवांछितपावै ॥  
जय० ॥ ८ ॥

इति श्रीसत्यनारायणजीकी आरती समाप्त ।

## अथ पार्वतीदेवीकी आरती प्रारम्भ

जयपार्वतीमाताजयपार्वतीमाता ॥ ब्रह्मसनातनदेवी  
शुभफलकीदाता ॥ १॥ अलिकुलपद्म निवासीनिजसेवक  
त्राता ॥ जगजीवनजगदंबाहारै हरगुणगाता ॥ जय० ॥ १॥  
सिंहजवाहनसाजै लुंकडरहसाथा ॥ देववधूजहंगावतनि-  
रतकरततथा ॥ जयपा० ॥ २॥ सत्यगुरुपशीलअतिसुंदर  
नामसतीकहाता ॥ हेमाचलघरजनमीसखियन संगराता ॥  
जयपा० ॥ ३॥ शुंभनिशुम्भबिडारेहे माचलस्थाता ॥ सहस्र  
भुजातनुधरकेचक्रलिया हाता ॥ जयपा० ॥ ४॥ सृष्टिरूप

तुहिजननीशिव संगरंगराता ॥ नंदीभृंगीवीनवहीपरचामद-  
माता ॥ जयपा० ॥ ५ ॥ देवरअरजकरतहममनचितकूलाता ॥  
गावतदेदेतालीमनमेंरंगछाता ॥ जयपा० ॥ ६ ॥ श्रीपरताप-  
आरतीमैयाकीजो कोइनर गाता ॥ स्वर्गसुखीनितरहता  
सुखसंपति पाता ॥ जयपा० ॥ ७ ॥

इति पावतीजीकीआरतीसमाप्त

## अथ आरतीजानकीनाथजीकी

जयजानकीनाथाजयश्रीरघुनाथा ॥ दोड करजोड़ेवि-  
नऊंप्रभुमेरीसुनबाता ॥ टेरे ॥ तुमरघुनाथहमारेप्राणपिता  
माता ॥ तुमहोसजनसंगाती भक्तिमुक्तिदाता ॥ जय० ॥ १ ॥  
चौरासीप्रभु फंदछुटावोमेटोयमयाता ॥ निशिदिनप्रभुमो-  
यराखोअपनेसंगसाथा ॥ जय० ॥ २ ॥ सीतारामलक्ष्मण  
भरतशत्रुहनसंगचारोभैया ॥ जगमगज्योतिविराजतशो-  
भाअतिलहिया ॥ जय० ॥ ३ ॥ हनुमतनादबजावतनेवर  
टिमकाता ॥ सुवरणथाल आरतीकरतकौशल्यामाता ॥  
जय० ॥ ४ ॥ क्रीटमुकुटकरधनुषविराजतशोभाअतिभारी ॥  
मनीरामदरशनकीआशापलपलबलिहारी ॥ जय० ॥ ५ ॥

इति जानकीनाथजीकीआरतीसमाप्त



## अथ आरती लक्ष्मणबालाजीकी

जयबोलोसाधोलक्ष्मणबालाकी ॥ बालाकीवो नंदलालाकी ॥ टेर ॥ दक्षिणदेशसवालखपर्वत ॥ जगमगज्योति दिवालाकी ॥ ज० ॥ १ ॥ त्रिपदीमेंसीतारामजीविराजें ॥ चौकीहनुमतबालाकी ॥ ज० ॥ २ ॥ शेषाचलपरआपविराजो ॥ चौकीहनुमतबालाकी ॥ ज० ॥ ३ ॥ इजय विजयदोडपौरियांविराजें ॥ गरीधूसनगाराकी ॥ ज० ॥ ४ ॥ बालाजीकेरथपरकनकसिंहासन कलंगीबनीहीरालालाकी ॥ ज० ॥ ५ ॥ बृहस्पतिवारजरीकोजायो ॥ ऊपरमौजदुशालाकी ॥ ज० ॥ ६ ॥ शुक्रवारदूधकोन्हावण ॥ मौजबनी मोहनमालाकी ॥ ज० ॥ ७ ॥ देशदेशकेयात्री आवें ॥ मारपडैमृगछालाकी ॥ ज० ॥ ८ ॥ आशानंदगरीबतुम्हारो ॥ पतिराखोवोकंठीमालाकी ॥ ज० ॥ ९ ॥ जयबोलोसाधोलक्ष्मणबालाकी ॥ बालाकीवोनंदलालाकी ॥ हरिहरिदशरथसुतनंदलालाकी ॥ हरिहरिपरदेशौरखवालाकी ॥ हरिहरि घाटवाटरखवालाकी ॥ ज० ॥ १० ॥ इति ॥

## अथ आरती श्रीराधावरकी

आरतिराधावरकी कीजै ॥ युगलस्वरूपनयन भरपीजै ॥ ॥ टेर ॥ रत्नजटितहाटककी आरति सुरभीघृतसुगंधमन-



भावति, करसरोजसे मातउतारति पुष्पवृष्टिअमृतरस  
भीजै ॥ आरति० ॥ इति ॥

### अथ आरती श्रीरामचन्द्रजीकी प्रारम्भ

आरतिकरतजनककरजोरे ॥ बड़ेभाग्यरामजी आये  
घरमोरे ॥ टेरे ॥ सीतास्वयंवरधनुषचढ़ायो ॥ सबभूपनको  
गर्वनवायो ॥ आ० ॥ १ ॥ तोड़ेधनुष कियेदोयटुकड़ा ॥  
रघुकुलहर्षरावणहोइशंका ॥ आ० ॥ २ ॥ आइयोसीतासंग-  
सहेली ॥ हरषनिरख वरमालामेली ॥ आ० ॥ ३ ॥ गज-  
मोतिनकोचौकपुरायो ॥ राजजनकघरमंगलगायो ॥ आ० ॥  
॥ ४ ॥ कंचनथारकपूरकीबाती ॥ सुरनरमुनिहरिकेआये  
बराती ॥ आ० ५ ॥ राजादशरथऔरजनकवैदेही ॥ भरत  
शत्रुहनपरमसनेही ॥ आ० ॥ ६ ॥ धनिधनिरामलक्ष्मण-  
दोउभाई ॥ धनिदशरथकौशल्यामाई ॥ आ० ॥ ७ ॥ मिथि-  
लापुरमेंबजतबधाई ॥ दास मुरारिकी आरतिगाई ॥ आ०-  
॥ ८ ॥

इति रामचन्द्रजीकीआरतीसमाप्त

### अथ शिवजीकी आरती प्रारम्भ

श्रीशगंगअर्द्धगपार्वतीसदाविराजतकैलासी ॥ नंदीभृ-



गीनृत्यकरतहैगुणभक्तनशिवकीदासी ॥ १ ॥ शीतलमंद  
 सुगंधपवनबहैबैठेहैंशिवअविनाशी ॥ करतगानगंधर्वसप्त-  
 सुररागरागनीअतिगासी ॥ २ ॥ यक्षरक्षभैरवजहँडोलतबो-  
 लतहैंबनकेवासी ॥ कोयलशब्दसुनावतसुंदरभँवरकरतहैं  
 गुजासी ॥ ३ ॥ कल्पद्रुमअरुपारिजाततरुलागरहेहैंल-  
 क्षासी ॥ कामधेनुकोटिकजहँडोलतकरतफिरतहैंभिक्षासी ॥  
 ॥ ४ ॥ सूर्यकांतसमपर्वतशोभित चंद्रकांतभवमीवासी ॥  
 छहोऋतूनितफलतरहतहैंपुष्पचढ़तहैंवर्षासी ॥ ५ ॥ देवमु-  
 निजनकीभीड़पड़तहैं निगम रहतजोनितगासी ॥ ब्रह्मा-  
 विष्णुजाकोध्यानधरतहैंकछु शिवहम कोफरमासी ॥ ६ ॥  
 ऋद्धिसिद्धिकेदाताशंकरसदाअनंदितसुखरासी ॥ जिनको  
 सुमिरनसेवाकरताटूट जाययमकीफांसी ॥ ७ ॥ त्रिशूलधर-  
 जीकोध्याननिरंतरमनलगायकरजोगासी ॥ दूरकरोविष-  
 ताशिवतनुकीजन्मजन्मशिवपदपासी ॥ ८ ॥ कैलासी-  
 काशीकेवासीअविनाशीमेरीसुधल ज्यो ॥ सेवकजानस-  
 दाचरणनकोअपनोजानदरशदीज्यो ॥ ९ ॥ तुमतोप्रभुजी-  
 सदासयानेअवगुणमेरेसब ढकियो ॥ सबअपराध क्षमा-  
 कर शंकरकिंकरकी विनती सुनियो ॥ १० ॥ इति शिव-  
 जीकी आरतीसमाप्त ॥



## अथ पुनः आरती शिवजीकी

जैजैहेशिवपरंपराक्रमओंकारेश्वरतुवशरणं ॥ नमामि  
शंकरभवानिशंकरहरहरशंकरतुवशरणं ॥ ढेरदशभुजमंडन  
पंचवदनशिवत्रिनयनशोभितशिवसुखदा ॥ जटाजूटशिर  
मुकुटविराजैश्रवणकुण्डलअतिरमणं ॥ जैजैहे० ॥ १ ॥ ललाट  
चमकतरजनीनायकपन्नगभूषणगौरीशा ॥ त्रिशूलअंकुश  
गणपतिशोभाडमरूबाजतध्वनिमधुरा ॥ जैजै० ॥ २ ॥  
भस्मविलेपनसर्वांगेशिवनन्दीवाहनअतिरमणा ॥ वामांगे  
गिरिजाहैविराजत घंटानादिकधुनिमधुरा ॥ जैजै० ॥ ३ ॥  
गजचर्मांबरबाघंबरहरकपालमालगंगेशा ॥ पंचवदनपर  
गणपतिशोभापृष्ठेगिरिपतिज्वालेशा ॥ जैजैहे० ॥ ४ ॥  
सिद्धेश्वरममलेश्वरशंकरकपिलेश्वरश्रीकोटेशा ॥ कपिला  
संगमनिर्मलजलहैकोटितीरथेभयहरणा ॥ जैजैहे० ॥ ५ ॥  
नर्मदकावेरीजलसंगममध्येशोभितगिरिशिखरा ॥ इंद्रा-  
दिकपतिसुरपतिसेवितरंभाआदिकध्वनिमधुरा ॥ जैजैहे०  
॥ ६ ॥ मंगलमूर्तिप्रणवाष्टकशिवअद्भुतशोभामृडभवनं ॥  
सनकादिकमुनिकरतेस्तोत्रमनवांछितशिवभयहरणं ॥ जैजै  
हे० ॥ ७ ॥ प्रणवाष्टकपदध्यायजनेश्वररचयतिविमलंपद  
वाष्टं ॥ तवकृपयात्रिगुणात्मा शिवजीपतितनपावनभय  
हरणं ॥ जैजैहे० ॥ इति शिवजीकी आरती समाप्त ॥



## अथ पुनः आरती शिवजीकी

दर्शनदेवोसदाशिवशंभूभक्तवत्सलतेरानागहवे॥मस्तक  
तेरेचन्द्रविराजैशीशमध्यमेंगंगहवे ॥ टेरे ॥ नाथहाथलिये  
डमरुबजावेभुजंगहृदयपरसाजहवे । तीनकोटिसवालक्ष  
हजारेगणतेरेसन्मुखनाचहवे ॥ दर्शन० ॥ १॥ हाथत्रिशूल  
लियाभोलेशंभूवामांगगवरीसाजहवे । भस्मरमावतअंगतू  
सारेलेरुंडमालाराजहवे ॥ दर्शन० ॥ २॥ कोउत्रिबंकेकोउ  
अंगलंबेकाहुकेवसनउघारेहवे । काहुकेकेशबनेअतिपीरे  
रक्तरंगकोउकालेहवे ॥ दर्शन० ॥ ३॥ आसनतेराकैलास  
विराजतलहरीलीगंगाजहवे । भांगधतूरोसदारहैखातातल  
बाघंबरसाजहवे ॥ दर्शन० ॥ ४॥ नारदइंद्रदेवसबदानव  
आरतीतेरोगावहवे । असीहिमानुषगावसुनेजेमनवांछित  
फलपावहवे ॥ दर्शन० ॥ ५॥ रूपकहैकरजोरसदाशिवमोरे  
मनोरथकीजेहवे । गुरुचरणोंमेंप्रीतिरहोनितवचनसफल  
मेराकीजेहवे ॥ ६॥ दर्शनदेवोस० ॥

इति श्रीशिवजीकी आरती समाप्त ।

## अथ आरती श्रीदुर्गाजीकी

मंगलकीसेवासुनमेरीदेवाहाथजोड़तेरेद्वारखड़े । पान  
सुपारीध्वजाखोपरा लेज्वालातेरेभेंटधरे ॥ सुगजगदंबेकर



नविलंबेसंतनकाभंडारभरे । संतनप्रतिपालीसदाखुस्याली  
 जैकालीकल्याणकरे ॥ टेर ॥ बुद्धिविधातातूजगमातामेरा  
 कारजसिद्धकरे ॥ चरणकमलकालियाआसराशरणतुम्हारी  
 आनपरे । जबजबभीड़पड़ेभक्तनपरतबतबआयसहायकरे ॥  
 संतन० ॥ १ ॥ बारबारतैंसबजगमोह्योतरुणीरूपअनूपधरे ।  
 माताहोकरपुत्रखिलावेकहींभारज्याभोगकरे ॥ संत० ॥ २ ॥  
 संतनसुखदाईसदासहाईसंतखड़ेजयकारकरे । ब्रह्माविष्णु  
 महेशसहस्रफणलियेभेंटतेरेद्वारखड़े ॥ अटलसिंहासनबैठी  
 माताशिरसोनेकाछत्रफिरे ॥ संत० ॥ ३ ॥ वारशनिश्चर  
 कुंकुमवरणोजबलुंकडपरहुकुमकरे । खड्गखप्रतिरशूलहाथ  
 लियारक्तबीजकूपकड़दला ॥ संतन० ॥ ४ ॥ आदितवार  
 आदकोबीराजनअपनेकोकष्टहरे ॥ कोपहोयकरदानोमारे  
 चंडमुंडसबचूर करे ॥ जबतुमदेखोदयारूपहोयपलमेंसंकट  
 दूरकरे ॥ संत० ॥ ५ ॥ सौमस्वभावधरचोमेरीमाताजनकी  
 अरजकबूलकरे ॥ सिंहपीठपरचढ़ीभवानी अटलभवनमें  
 राज्यकरे ॥ दर्शनपावेंमंगलगावें सिद्धसाधतेरेभेंटधरे ॥  
 संतन० ॥ ६ ॥ ब्रह्मावेदपढ़ेंतेरेद्वारेशिवशंकरजीध्यानधरे ॥  
 इंद्रकृष्णतेराकरैंआरतीचमरकुबेरदुलायरहे ॥ जयजननी  
 जयमातुभवानीअटलभवनमेंराज्यकरे ॥ संतन० ॥ ७ ॥



## अथ पुनः आरती दुर्गाजीकी प्रारंभ

सुनमेरीदेवीपर्वतवासिनितेरापारनपाया ॥ टेर ॥ पान  
 सुपारीध्वजानारियललेतेरीभेंटचढ़ाया ॥ सुन० ॥ १ ॥  
 सुवाचोलातेरेअंगबिराजे । केसरतिलकलगाया ॥ सुन०  
 ॥ २ ॥ ब्रह्मावेदपढ़ेंतेरेद्वारे शंकरध्यानलगाया ॥ सुन० ॥ ३ ॥  
 नंगेपगतेरेअकबरआया । सोनेकाछत्रचढ़ाया ॥ सुन० ॥ ४ ॥  
 उँचउँचपर्वतबण्योदिवालो । नीचेशहरबसाया ॥ सुन०  
 ॥ ५ ॥ कलियुगद्वापरत्रेतामध्ये । कलियुगराजसवाया ॥  
 सुन० ॥ ६ ॥ धूपदीपनैवेद्यआरती । मोहनभोगलगाया ॥  
 सुन० ॥ ७ ॥ धानूभगतमैयातेरागुणगावे । मनवांछित  
 फलपाया ॥ सुन० ॥ ८ ॥

इति श्रीदुर्गाजीकी आरती समाप्त ।

## अथ बजरङ्गवालाकी आरती

जाकेबलसेगिरिवरकंपै ॥ देवपिशाचनिकटनहिंझंपै ॥  
 आरतीकीजेहनुमानललाकी ॥ दुष्टदलनरघुनाथकलाकी  
 ॥ टेर ॥ लंकासेकोटसमुद्रसी खाई ॥ जातपवनसुतबारन  
 लाई ॥ १ ॥ आर० ॥ देबीङ्गारघुनाथपठाये ॥ लंकाजारि  
 सियासुधिल्याये ॥ आर० ॥ २ ॥ जगमगज्योतिअवधपुर



राजा । घंटातालपखाडजबाजा ॥ आर० ॥ ३ ॥ शक्ती  
 बाणलगोलक्ष्मणको ॥ आनसजीवनलषणजिवाये ॥ आर०  
 ॥ ४ ॥ पैठपतालतोड़यमकातर ॥ अहिरावणकीभुजाड-  
 खाड़े ॥ आ० ॥ ५ ॥ आरति कीजेजैसीतैसी ॥ ध्रुवप्रह्लाद  
 विभीषणजैसी ॥ आर० ॥ ६ ॥ सुरनरमुनिजनआरति  
 उतारें ॥ जैजैकपिराजउचारें ॥ आ० ॥ ७ ॥ कंचनथाल  
 कपूरसुहाई ॥ आरति करतअंजनीमाई ॥ आर० ॥ ८ ॥  
 बाईभुजासेअसुरसँहारे ॥ दहनीभुजसुरसंतउधारे ॥ आर०  
 ॥ ९ ॥ लंकप्रजारअसुरसबमारे ॥ राजा रामजीकेकारज  
 सारे ॥ आर० ॥ १० ॥ अंजनि पुत्रमहाबलदायक ॥ देव  
 संतकेसदासहायक ॥ आर० ॥ ११ ॥ लंकविध्वंसनसिया  
 रघुराई ॥ तुलसि दासकपिआरतीगाई ॥ १२ ॥ आर० ॥  
 जोहनुमानजीकीआरतिगावै ॥ बस वैकुण्ठ बहुरिनिहिं  
 आवै ॥ इति आरतिहनुमानजीकी समाप्त ॥ १३ ॥

### अथ आरतीजगन्नाथजीकी

आरतीश्रीजगन्नाथमंगलाकरी ॥ परसतचरणारविन्द  
 आपदाहरी ॥ निरखतमुखारविन्दआपदा हरी ॥ कंचनमन  
 धूपध्यानज्योतिजगमगी ॥ अग्नि कुण्डलधिरतपावपाव  
 साथरी ॥ आर० ॥ १ ॥ दमनद्वारेठाढ़ेरोहिणी ॥ -मार्कंडे



श्वेतगंगाआन कभरी ॥ आर० ॥२॥ गरुड़खंबसिंहपौर  
यात्राजुड़ी ॥ यात्राकीभीड़बहुतबेतकीघड़ी ॥ आर० ॥३॥  
सुरनरमुनिद्वारेठाढ़ैब्रह्मावेदउचारी ॥ धन्यधन्यसूर श्याम  
आजकीघड़ी ॥ आर० ॥४॥ इति ॥

## अथ आरतीशिवजीकी

कैलासीकाशीकेवासीअबिनाशीमेरीसुधिलीजे ॥ सेवक  
शरणसदाचरणनकोअपनोजानिकृपाकीजे अभयदानदी-  
जेप्रभुमोरेसकलसृष्टिकेहितकारी ॥ भोलेनाथतुमभक्तनि-  
रंजनभवभंजन भवशुभकारी दीनदयालुकृपालकालुरिपु  
अलखनिरंजनशिवयोगी ॥ मंगलरूपअनूपछवीलेअखिल  
भुवन केतुमभोगी ॥ बांवोअंगरंगरसमीनोउमावदनकी  
छबिन्यारी ॥ भोलेनाथ० ॥ १ ॥ असुरनिकंदनसबदुख  
भंजनवेदबखानेजगजाने ॥ रुंडमाल गलब्यालभालशशि  
नीलकंठलियामनमाने ॥ गंगाधरत्रिशूलधरविषधरबांध  
वरधरगिरिधारी ॥ भोले० ॥२॥ योभवसागरअतिअगाध  
हैपारउतर कैसेसूजै ॥ यामेंग्राहमगरबहुकच्छपयोमारग  
कैसे सूजै ॥ नामतुम्हारोनौकानिर्मलतुमकेवटशिवअधि-  
कारी ॥ भोलेना० ॥३॥ मैंजानूँतुमनिपटसयाने अवगुण  
मेरेसबढकियो ॥ सबअपराधक्षमाकरशंकरकिंकरकीविन-



तीसुनियो ॥ तुम तो जग के कल्पतरू हो मैं हों प्राणी संसारी ॥  
 भोलेना ० ॥४॥ काम क्रोध यो महा अपरबल इन से मेरो बस  
 नाई ॥ लोभ मोह यों संग नहिं छाँड़े आन देत नहिं तुम ताई ॥  
 क्षुधा तृषा नित लगी रहत है ताऊ पर तृष्णा भारी ॥ भोलेना ० ॥  
 ॥५॥ तुम ही शिवजी कर्ता हर्ता तुम ही युग के रखवारे ॥ तुम ही  
 गगन मगन पुनि पृथिवी पर्वत पुत्री के प्यारे ॥ तुम ही पवन हु-  
 तासन शिवजी तुम ही दिन कर शशि हारे ॥ भोलेना ० ॥६॥  
 पशुपति अजर अमर अमरेश्वर योगेश्वर शिव गोस्वामी ॥  
 वृषभाकूट गूढगुरु गिरिपति गिरिजावल्लभ निष्कामी ॥  
 शोभा सागर रूप उजागर गावत हैं सब नर नारी ॥ भोले ० ॥  
 ॥७॥ महादेव देवन के अधिपति फणिपति भूषण अति साजे ॥  
 दीप्त लिलाट लाल दोडलोचन जिन के उर ता दुख भाजे ॥ परम  
 पुनीत पुनीत पुरातन महिमा त्रिभुवन विस्तारी ॥ भोलेना ०  
 ॥ ८ ॥ ब्रह्मा विष्णु महेश शेष मुनि नारद आदि करत सेवा ॥  
 जिन की इच्छा पूरण कीन्ही नाथ सनातन हर देवा ॥ भक्ति मु-  
 क्तिके दाता शंकर सदा निरंतर सुख राशी ॥ भोलेना ० ॥९॥  
 महिमा इष्ट महेश्वर जी की सिखे मुने जे नित गावें ॥ अष्ट सिद्धि  
 नौ निधि सुख संपति स्वामि भक्ति मुक्ती पावें ॥ श्री अहि भूषण  
 प्रसन्न होय कर कृपा करो शिव त्रिपुरारी ॥ भोलेना ० ॥१०॥



## अथ आरतीबजरंगबालाकी

आरती कीजै हनुमानजी ललाकी ॥ दुष्ट दलन रघु-  
नाथकलाकी ॥ टेक ॥ जाके बलसे गिरिवर कांपे । रोग  
दोष जाके निकट न झांके ॥ १ ॥ अंजनी पुत्र महाबल  
दाई ॥ संतनके प्रभु सदा सहाई ॥ २ ॥ दे वीरा रघुनाथ  
पठाये । लंका जारि सिया सुधि लाये ॥ ३ ॥ लंका ऐसे  
कोट समुद्र ऐसी खाई ॥ जात पवनसुत बार न लाई ॥ ४ ॥  
लंका जारि असुर सब मारे । साता रामजीके काज सँवारे  
॥ ५ ॥ लक्ष्मण मुरछि परे धरणीमें ॥ आनि सजीवनि प्राण  
उबारे ॥ ६ ॥ पैठि पताल तोरि यमकातर ॥ अहिरावणके  
भुजा उखारे ॥ ७ ॥ बायेंभुजा सब असुर सँहारे । दहिने  
भुजा सब संत उबारे ॥ ८ ॥ सुर नर मुनि जन आरति  
उतारैं ॥ जै जै जै हनुमानजी उचारैं ॥ ९ ॥ कंचनथार  
कपूरकी बाती ॥ आरति करति अंजनी माई ॥ १० ॥ जो  
हनुमानजीकी आरती गावैं । बास बैकुंठ अमर पद पावैं  
॥ ११ ॥ लंकविध्वस किये रघुराई ॥ तुलसीदास स्वामी  
आरति गाई ॥ १२ ॥

## अथ आरती रामचन्द्रजीकी

आरती कीजै राजा रामचंद्रजीकी । हरि हरि दुष्ट दलन



सीतापतिजीकी ॥ टेक ॥ पहिली आरति पुष्पकी माला ।  
 कालीनाग नाथ लाये गोपाला ॥ १ ॥ दुसरी आरती  
 देवकिनंदन । भक्तउधारन कंसनिकंदन ॥ २ ॥ तिसरी  
 आरती त्रिभुवन मोहै । रत्नसिंहासन सीतारामको सोहै  
 ॥ ३ ॥ चौथी आरति चहुँयुग पूजा । देवनिरंजन स्वामी  
 और न दूजा ॥ ४ ॥ पंचमी आरति रामजीको भावै ।  
 रामजीको यश नामदेवजी गावै ॥ ५ ॥

### पुनः आरती श्रीरामचन्द्रजीकी

सखी आरती करी रसप्रेम भरी । सिया रघुवरजीको  
 शृंगार करी ॥ टेक ॥ मणिमय थार सखिन कर राजें  
 बाती रवि शशि द्युति निदरी ॥ १ ॥ बाजत हैं भेरी निसान  
 दुंदुभी शंख झांझ करताल घरी ॥ २ ॥ नाचत गान करत हैं  
 सखि थेइ थेइ सुमन लाल मणि होत झरी ॥ ३ ॥ रामचरण  
 सिय राम रूप लखि आनंद उर रससिंधु भरी ॥ ४ ॥

### आरती श्रीवेङ्कटेशजीकी

श्रीमच्छेषशैलवासं । नीराजये श्रीनिवासम् ॥ त्रातः  
 स्वपदपद्मदासं । नीरदभव्यदिव्यभासं ॥ नी० ॥ बिभ्राणंसत  
 रविप्रतिभटं । हरिखचितचामीकरमुकुटं ॥ भृंगप्रभकुटि-



लालकजालं । केसरभृगमदतिलकितभालं ॥ भ्रूविभ्रमकृत  
 कार्मुकजयनं । इंदीवरदलविशालनयनं ॥ तिलकुसुम  
 प्रतिमोत्तमनासं । बिंबविडबकृताधरवासं ॥ स्निग्धामल-  
 तलगंडमंडलं । कर्णयुगापितमकरकुंडलम् ॥ शारदचंद्र  
 मनोहरवदनं । कुंदसुन्दरप्रभाग्रदनं ॥ स्वजनानुग्रहशुचि  
 मंदहासं । नीराजयेश्रीनिवासं ॥ १ ॥ कंबुकंठमतिपीन  
 स्कंधं । दृगगोचरजव्रुस्थलबंधं ॥ चंदनचर्चितविशालबाहुं ।  
 अभयवरारिदरायुधबाहुं ॥ धृतकनकांगदकटकतोडरं ।  
 विदलितहरिकणप्रभनखरं ॥ श्रीवत्सश्रीहृदयकपाटं ।  
 विद्युत्पिञ्जरचित्रितशाटं ॥ उरःपीठलुठडुरुतरहारं । त्रिबलि-  
 बंधुरिततुंदिलजठरं ॥ पारिजातनवसुमनोमालं । नाभि-  
 जातचतुराननबालं ॥ कटितटसुघटितपीतपटन्यासं ॥  
 नीराजये ॥ २ ॥ सौरभलुभ्यद्भ्रमरकदंबं । मणिशृंखल  
 परिरंभिनितंबं ॥ परमरुचिरपीवरोरुबंधं । जानुमतिपेशल  
 जंघं ॥ वलयकलितघनकनकतोडरं । मंजुमंजुसिंजाननूपुरं ॥  
 मृदुलपार्ष्णि सरजांगुलितरणं । दुस्तरतरभवसागरतरणं ॥  
 विलसन्नखमणिपूर्णचंद्रिकं । निरस्तवनितानादितंद्रिकं ॥  
 श्रीभूदेवीचमरवीजितं । नारदसुखसनकादिपूजितम् ॥ पंत  
 विवृलत्रासगणग्रासं । नीराजयेश्रीनिवासम् ॥ ३ ॥



## अथ रघुनाथजीकी आरती

आज बनी छवि भारी श्रीराघवजीकी ॥ टेक ॥ सहित  
 जानकी रत्नसिंहासन राजत अवध बिहारी ॥ १ ॥ रवि  
 शशि कोटि देखि छवि लाजे तिलक पटल द्युतिकारी ॥  
 वदन मयंक ताप त्रयमोचन मंद हासरसन्धारी ॥ २ ॥  
 बांये अंग जानकीजी सोहैं हनुमत आझाकारी । गौरी  
 श्याम सुन्दर तनुसोहैं चंद्रवदन उजियारी ॥ ३ ॥ रत्न  
 जटित आभूषण सोहैं मोतिनकी छवि न्यारी ॥ क्रीट  
 मुकुट मकराकृत कुंडल औ वनमाल सोहारी ॥ ४ ॥ बाहु  
 विशाल विभूषण सुन्दर करगहि सारंगधारी । कटिपर  
 पीत वसनकी शोभा मोहत मदननिहारी ॥ ५ ॥ मुनिजन  
 चरणसरोरुह सेवत ध्यान धरत त्रिपुरारी ॥ चतुरसखी  
 मिलिकरत आरती सज कंचनकीथारी ॥ ६ ॥ रामसेवक  
 जयध्वनि उचरत गावत पुर नर नारी ॥ मातु कौशिला  
 करै आरती तुलसिदास बलिहारी ॥ ७ ॥

इति आरतीसंग्रह समाप्त



॥ श्रीरामजी ॥

## संकट-मोचनकी आरती

जै हनुमत बीरा ! संकटमोचन स्वामी ॥ तुम हो  
रणधीरा । पवन-पुत्र, अंजनि-सुत-महिमा अति भारी ।  
दुख दारिद्र मिटावो, संकट सब हारी ॥ जै हनु० ।  
बाल समयमें तुमने-रविको भक्ष लियो । देवन अस्तुति  
कीनी-तबही छाड़ दियो ॥ जै हनु० । कपि सुग्रीव राम-  
संग मैत्री करवाई । बालि मराय कपीशहि गद्दी दिलवाई ॥  
जै हनु० । जारि लंक ले सियसुध-बानर हरखाये । कारज  
कठिन सँवारे-रघुबर मन भाये ॥ जै हनु० । शक्ति लगी  
लछमनको-भारी शोच भयो । लाय सजीवन बूटी-दुख  
सब दूर कियो ॥ जै हनु० । ले पताल अहिरावण-जब हीं  
पैठ गयो । ताहि मार प्रभु लाये जैजैकार भयो ॥ जै  
हनु० । जसरापुरमें शोभित-मूरति अति प्यारी । पौष  
पूर्णिमा शुभदिन-मेला है जारी । जै हनु० । महाबीरकी  
आरति जो कोई नर गावे । कहै भगवती हर्षित-बांछित  
फल पावे ॥ जै हनु० ॥



## आरती ओ३म् जय जगदीश हरे !

ओ३म् जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे ।  
 भक्त जनों के संकट, क्षणमें दूर करे । ओ३म्...  
 जो ध्यावे फल पावे, दुख बिनसे मन का, स्वामी दुख०  
 सुख सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तन का । ओ३म्...  
 मात पिता तुम मेरे शरण गहूं किसकी, स्वामी शरण०  
 तुम बिन और न दूजा, आश करूं जिसकी । ओ३म्...  
 तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी, स्वामी तुम०  
 पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी । ओ३म्...  
 तुम करुणा के सागर, तुम पालनकर्ता, स्वामी तुम०  
 मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता । ओ३म्...  
 तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपती, स्वामी सबके०  
 किस विधि मिलूं दयामय ! तुमको मैं कुमती । ओ३म्...  
 दीनबन्धु दुखहर्ता, तुम रक्षक मेरे, स्वामी तुम०  
 अपने हाथ उठाओ, द्वार षड़ा तेरे । ओ३म्...  
 विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा, स्वामी पाप०  
 श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा । ओ३म्...  
 तन, मन, धन जो कुछ है, सब ही है तेरा, स्वामी सब०  
 तेरा तुझको अर्पित, क्या लागे मेरा । ओ३म्...  
 जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे ।  
 भक्तजनों के संकट, क्षण में दूर करे । ओ३म्...



## श्रीविश्वनाथ-आरती

जय गंगाधर हर जय गिरिजाधीश, शिव ! जय गिरिजाधीश ।  
 त्वं मां पालय नित्यं कृपया जगदीश । ओं हर हर हर महादेव ॥१॥  
 कैलासे गिरि-शिखरे कल्पद्रुम-विपिने, शिव ! कल्पद्रुम-विपिने ।  
 गुञ्जन् मधुकर-पुञ्जे कुञ्ज-वने गहने । ओं हर हर हर महादेव ॥२॥  
 कोकिल कूजति खेलति हंसावलि ललिता, शिव ! हंसावलि ललिता ।  
 रचयति कला-कलापं नृत्यति मुद-सहिता । ओं हर हर हर महादेव ॥३॥  
 तस्मिन् ललित-सुदेशे शाला मणि-रचिता, शिव ! शाला मणि-रचिता ।  
 तन्मध्ये हरनिकटे गौरी मुद-सहिता । ओं हर हर हर महादेव ॥४॥  
 क्रीडा रचयति भूषं रंजित निजमीशं, शिव ! रंजित निजमीशं ।  
 इन्द्रादिक सुर सेवित प्रणमति ते शिरसम् । ओं हर हर हर महादेव ॥५॥  
 विबुध-वधूर्बहु नृत्यति हृदयं मुद-सहिता, शिव ! हृदये मुद-सहिता ।  
 किन्नर गानं कुरुते सप्तस्वर-सहिता । ओं हर हर हर महादेव ॥६॥  
 धिनकत धेइ धेइ धिनकत मृदंग वादयते, शिव ! मृदंग वादयते ।  
 क्वण क्वण ललिता वेणुमधुरं नादयते । ओं हर हर हर महादेव ॥७॥  
 रुण रुण चरणे रचयति नूपुरमुज्ज्वलितम्, शिव ! नूपुरमुज्ज्वलितम् ।  
 चक्रावर्ते भ्रमयति कुरुते ताधिकतम् । ओं हर हर हर महादेव ॥८॥  
 तांतां लुपचुप तांतां डमरु वादयते, शिव ! डमरु वादयते ।  
 अगुष्ठांगुलि-नादं लाम्य-गतं कुरुते । ओं हर हर हर महादेव ॥९॥  
 कर्पूर-द्युति-गौरं पंचानन-सहितं, शिव ! पंचानन-सहितं ।  
 त्रिनयन शशिधर-मौलि विषधर कंठयुतं । ओं हर हर हर महादेव ॥१०॥  
 सुंदर-जटाकलापं पावक-युत-भालं, शिव ! पावक-युत-भालं ।  
 डमरु-त्रिशूल-पिनाकं करघृत-नूकपालं । ओं हर हर हर महादेव ॥११॥  
 भुंडे रचयति माला पन्नगमुपवीतम्, शिव ! पन्नगमुपवीतम् ।  
 वाम-विभागे गिरिजा-रूपम् अति ललितं । ओं हर हर हर महादेव ॥१२॥  
 सुंदर-सकल-शरीरे कृत-भस्मा-भरणं, शिव ! कृत-भस्मा-भरणं ।  
 इति वृषभध्वजरूपं तापत्रय-हरणं । ओं हर हर हर महादेव ॥१३॥  
 शंखनिनादं कृत्वा झल्लरी नादयते, शिव ! झल्लरी नादयते ।  
 नीराजयते ब्रह्मा वेद-ऋचं पठते । ओं हर हर हर महादेव ॥१४॥  
 अति मृदु-चरण सरोजौ हृदि कमले धृत्वा, शिव ! हृदि कमले धृत्वा ।  
 अवलोकयति महेशं ईशं अभिनत्वा । ओं हर-हर हर महादेव ॥१५॥



ध्यानं आरति समये हृदये इति कृत्वा, शिव ! हृदये इति कृत्वा ।  
 रामस्त्रिजटा-नाथं ईशं अभिनत्वा । ओं हर हर हर महादेव ॥१६॥  
 सांगीतमेवं प्रतिदिन पठनं यः कुरुते, शिव ! पठनं यः कुरुते ।  
 शिवसायुज्यं गच्छति भक्त्या यः शृणुते । ओं हर हर हर महादेव ॥१७॥

॥इति॥

## ✽ प्रार्थना ✽

पितु मातु सहायक स्वामी सखा,  
 तुम ही एक नाथ हमारे हो ।  
 जिनके कुछ और आधार नहीं,  
 तिनके तुम ही रखवारे हो ।  
 सब भाँति सदा सुखदायक हो,  
 दुःख निर्गुण नाशन हारे हो ।  
 प्रतिपाल करो सिगरे जग को,  
 अतिशय करुणा उर धारे हो ।  
 भुलि हैं हम तो तुमको, तुम तो  
 हमरी सुधि नाहि बिसारे हो ।  
 उपकारन को कछु अन्त नहीं  
 छिन ही छिन जो विस्तारे हो ।  
 महाराज महा महिमा तुम्हरी,  
 सुझसे बिरले बुधवारे हो ।



शुभ शान्ति निकेतन प्रेमनिधे,  
 मन मन्दिर के उजियारे हो ।  
 इह जीवन के तुम जीवन हो,  
 इन प्राणन के तुम प्यारे हो ।  
 तुम सों प्रभु पाय 'प्रताप' हरि,  
 केहि के अब और सहारे हो ।

❀ ईश्वर प्रार्थना ❀

तेरे पूजन को भगवान बना मन मन्दिर आलीशान ।  
 किसने जानी तेरी माया किसने भेद तुम्हारा पाया ।  
 हारे ऋषि मुनिकरके ध्यान बना मन मन्दिर आली० ।  
 तू ही जलमें तूही थल में तूही मनमें तूही वनमें ।  
 तेरा रूप अनूप महान बना मन मन्दिर आलीशान ।  
 तू हरगुलमें तू बुलबुलमें तू हर डालके हर पातनगें ।  
 तू हर दिलमें मूर्तिमान बना मन मन्दिर आलीशान ।  
 तूने राजा रंक बनाये तूने भिक्षक राज बिठाये ।  
 तेरी लीला ऐसी महान बना मन मन्दिर आलीशान ।  
 भजु श्री गोविन्द परमानन्द करुणाकंद राम हरे ।  
 श्रीदशरथनंदन असुर निकंदन जनउर चंदनश्याम हरे ।  
 कृष्ण मुरारे नन्द दुलारे प्रीतम प्यारे जयकृष्ण हरे ।  
 जयराम हरे जयराम हरे जयकृष्ण हरे जयकृष्ण हरे ।



## पुष्पांजली

हरिः ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ते ह नाकं महिमानः  
 सचन्त यत्र पूर्व्वं साध्याः सन्ति देवाः । हरिः ॐ राजाधिराजाय प्रसह्यसाहिने नमो वयं  
 वैश्वनाय कुर्महे । स मे कामान्कामकामाय ब्रह्मम् । कामेश्वरो वैश्वनाथो दधातु । कुबेराय  
 वैश्वनाय महाराजाय नमः ॥ ॐ स्वस्ति साक्षाज्यं भोज्यं स्वधाज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं  
 राज्यं माहाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात्सार्यमौमः सार्वभूष आन्तादापराधत्पृथिव्यै-  
 समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति । तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतःपरिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन्  
 गृहे । आविभित्तस्य कामप्रेक्षिश्वेदेवाः सभासद इति ॥ ॐ विश्वतश्चक्षुस्त विश्वतोमुखो  
 विश्वतो बाहुस्त विश्वतस्पात् । संबाहूभ्यां धमति संपतत्रैर्छावा भूमी जनयन्ध्वे  
 एक ॥ तत्पुरुषाय विमहे महादेवाय धीमहि । तन्नो वरः प्रचोदयात् ॥ सेवंतिका-बकुल-  
 चंपक-पाटलाब्जैः पुष्पागजाति-करवीर-रसालपुष्पैः । विल्वप्रवालतुलसीदलजंजरीभिस्त्वां  
 पूजयामि जगदीश्वर विश्वनाथ ॥

## स्तुति :

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिर्मंजारचन्द्रावतंसं रत्नाकल्पोज्ज्वलांगं परशुभृगवराभी-  
 तिहस्तं प्रसन्नम् । पद्मासीनं समन्तास्तुतममरगर्ज्याप्रकृतिं वसावं विश्वाद्यं विश्ववंद्यं  
 निखिल भयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥११॥ काशमीरस्फटिकप्रभं त्रिनयनं पञ्चाननं  
 भूलिनं, खट्वांभ गालिवरप्रसाददम्ब-चक्रांगवीजाम्रम् । विष्णुं दशबोभिरौक्षजटिलं  
 वीरासने सुस्थितंगोरोशीसहितं सदैवमखिलं ध्यायेच्छिवं चर्मिणम् ॥२॥ वंदे देव-  
 मुमापतिं सुरगुरुं वंदे जंगत्कारणं वन्दे पन्नगभूषणं भृगधरं वंदे पशूनां पतिम् । वंदे  
 सूर्य-शशांक-वह्नि-नयनं वंदे मुकुन्दप्रियं, वन्दे भवत-जनाध्यं च वरदं वन्दे शिवं  
 शंकरम् ॥३॥ करचरणकृतं वाक्पायजं कर्मजं वा श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम् ।  
 विहितमविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो ॥४॥







मुद्रक एवं प्रकाशक:

खेमराजा श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS

